कोविड–19 के दृष्टिगत माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित पाठ्यक्रम सत्र 2021–22 हेतु लगभग 30% कम करने के पश्चात् शेष पाठ्यक्रम का अध्यायवार मासिक शैक्षिक पंचांग –

विषय–संस्कृत

कक्षा–12

क्रम सं0	माह	पाठ्यक्रम
1–	मई	**20 मई से ऑनलाइन शिक्षण कार्य प्रारम्भ।** महाकवि बाणभट्ट का जीवन परिचय एवं गद्य शैली। चन्द्रापीडकथा – सा तु समुत्थाय –– करे समर्पितवान्।
2–	जून	चन्द्रापीडकथा – चन्द्रापीडस्तु तत् –––पृच्छन् प्रतस्थे। नाटककार का जीवन परिचय एवं नाट्यशैली। अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ.कः) (आकाशे) रम्यान्तरः (श्लोक संख्या 11 से श्लोक संख्या– 14 तक)।
3–	जुलाई	चन्द्रापीडकथा – क्रमेण च –––नितरां पर्याकुलोऽभवत्। व्याकरण – कारक एवं विभक्ति – चतुर्थी विभक्ति– (सम्प्रदान कारक) – (1) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। (2) चतुर्थी सम्प्रदाने। (3) रूच्यर्थानां प्रीयमाणः। (4) क्रुध्द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः। (5) नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलं वषडयोगाच्च। पंचमी विभक्ति – (अपादान कारक) – (1) ध्रुवमपायेऽपादानम् (2) अपादाने पंचमी, (3) भीत्रार्थानां भयहेतुः, षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक) (1) षष्ठी शेषे। (2) षष्ठी हेतुप्रयोगे। सप्तमी विभक्ति – (अधिकरण कारक) 1. आधारोऽधिकरणम् 2. सप्तम्याधिकरणे च 3. यतश्च निर्धारणम्।
4–	अगस्त	महाकवि कलिदास का कवि परिचय एवं काव्य शैली। रघुवंशमहाकाव्यम्–(द्वितीय सर्ग) श्लोक संख्या 41–50 तक। व्याकरण – व्यंजन सन्धि – (1) स्तोः श्चुना श्चुः। (2) ष्टुना ष्टुः। (3) झलां जशोऽन्ते। (4) खरि च। (5) मोऽनुस्वारः। शब्दरूप–नपुंसक लिंगः– गृह, वारि, दधि, मधु, मनस्। सर्वनाम :– सर्व, तद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, एतत्, भवत्।
5–	सितम्बर	चन्द्रापीडकथा ''अत्रान्तरे प्रविश्य ––– आगन्तव्यम्'' इत्यादिश्य व्यसर्जयत्। व्याकरण – धातुरूप – आत्मनेपद :– लभ्, वृध्, शी, सेव्। उभयपद :– नी, याच्, दा, ग्रह्, ज्ञा।
6–	अक्टूबर	व्याकरण – समास–द्वन्द्वः, अव्ययीभावः, द्विगुः। विसर्ग सन्धि – (1) विसर्जनीयस्य सः। (2) ससजुषो रूः। (3) हशि च। (4) खरवसानयोर्विसर्जनीयः।
7–	नवम्बर	रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) – श्लोक संख्या 51–60 तक। व्याकरण–वाच्य परिवर्तन। निबन्ध। **अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन।**
8–	दिसम्बर	रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) – श्लोक संख्या 61–64 तक। व्याकरण–प्रत्यय–ल्युट्, ण्वुल, अनीयर्, टाप्, ङीष्, तुमुन्, क्त्वा। अनुवाद–जहाँ उपपद विभक्तियों का प्रयोग हो।

9–	जनवरी	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोङ्कः)–शकुन्तला–वत्स, किं–––अंक की समाप्ति तक। इति चतुर्थोङ्कः। व्याकरण – अलंकार – उपमा, रूपक। पुनरावृत्ति।
10–	फरवरी	**प्री बोर्ड परीक्षा का आयोजन।** कमजोर एवं प्रतिभाशाली छात्रों का उपचारात्मक शिक्षण।
11–	मार्च	**बोर्ड परीक्षा का आयोजन।**

नोट :– कक्षा 12 में लगभग 30प्रतिशत पाठ्यक्रम कम करने की दृष्टि से –

चन्द्रापीडकथा से –निर्गतायां केयूरकेण सह.....आनन्दस्य अध्यगच्छन्। एवं रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) से श्लोक संख्या : 65 से 75 तक को हटाया गया हें।

चतुर्थी विभक्ति– (सम्प्रदान कारक) – स्पृहेरीप्सितः।

पंचमी विभक्ति – (अपादान कारक) – जुगुप्साविराम प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् (वा), आख्यातोपयोगे।

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक) – क्तस्य च वर्तमाने।, षष्ठी चानादरे।

सप्तमी विभक्ति – (अधिकरण कारक) – साध्वसाधुप्रयोगे च (वा0)।

व्यंजन सन्धि – झलां जश् झशि।, तोर्लि।, अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

विसर्ग सन्धि – अतोरोरप्लुतादप्लुते।, वा शरि।, रोरि।, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

धातुरूप – आत्मनेपद :– भाष्, विद्।

धातुरूप – उभयपद :– चुर्, श्रि, क्री, धा।

शब्दरूप– नपुंसकलिंग– जगत्, ब्रह्मन्, धनुष्।

सर्वनाम– इदम्, अदस्।